बोधि प्रकाशन
जयपुर 302015

मेरे लिए विरासत में

रमेश सिन्हा

बोधि प्रकाशन
जयपुर 302015

बोधि प्रकाशन

प्रथम संस्करण : सितम्बर, 2001
आवरण : सुभाष सिंगाठिया 'स्पर्श'
ISBN 81-87697-46-6

बोधि प्रकाशन, जयपुर के लिए
पाठ्य भाग प्रिण्ट-ओ-लैण्ड, हवा सड़क, जयपुर तथा आवरण
कमला आर्ट प्रिन्टर्स, जयपुर से मुद्रित एव 64, शान्ति निकेतन कॉलोनी,
किसान मार्ग, बरकत नगर, जयपुर से प्रकाशित। दूरभाष 0141-591087, मूल्य : 80.00

अनुक्रमणिका

विनीता, रश्मि
नीरज, धीरज तथा
शालिनी को समर्पित

रगों में

मेरी रगों में
हर वक्त
खून के साथ
कविता की
एक धारा
बहती है
जिसे देखने के लिए
आंखों की नहीं
एक धारदार
चाक़ू की
जरूरत पड़ेगी।

कविता के साथ

मेरे सारे बदन को
कविता की चादर में
लपेट दो
और उछाल दो
आकाश में
गिरने दो
जमीन पर
समुद्र में
रेगिस्तान में
एक गरीब की झोंपड़ी में
स्कूल जाते हुए बच्चे के बस्ते में
नवजात शिशु की मुट्ठी में
मुझे कोई तकलीफ नहीं होगी
बल्कि एक
अपूर्व सुख से
भर उठूंगा मैं।

•

किश्तों में बयां होती है ज़िन्दगी

सारी दुनिया
एक मुहाने पर खड़ी है
और मैं अपनी कतार में
अकेला रह गया हूं
धीरे-धीरे
सारी हवा
मेरे आस-पास से सरक जाती है
मैं बंद हो जाता हूं- गुब्बारे में
बच्चे गुब्बारे के लिए मचल उठते हैं।

जमीन कोई सूत की दरी नहीं है
जिस पर चलते हुए
एक छोर को समेटा जा सके
और लपेटते हुए तह कर के
मजदूर को उठाने के लिए
कह दिया जाये।

सुनता रहा हूं अर्से से कि
ज़मीन, पानी और रोशनी
अमानत होती जा रही है
कुछ लोगों की
जिसे खरीद-खरीद कर लोग
जवानी से बुढ़ापा
और फिर

कब्र तक का सफर
तय करते जा रहे हैं।
यह आसान नहीं है
सफर
जिसे कुछ लम्हों मे
समेटा जा सके।

आहिस्ता-आहिस्ता, गुनगुना कर
मैंने देखा है कि
चीखना, रोना, हंसना भी
अपनी जागीर नहीं है
किसी की बस्तियों में कैद है
जो किश्त-दर-किश्त
भुगतान होती है।

•

पत्ते का दुःख और क्षोभ

सूखा सा एक पत्ता
मेरे पास आकर गिरा
मैं पूछता हूं- तुम कौन हो ?
बहुत दुखी लगते हो

पत्ता उदास था
दुख की आखिरी सीमा पर खड़ा था
वह बोला- तुम्हारे जैसे इंसानों ने
मुझे अनाथ बना दिया है
मेरे परिवार को अपने स्वार्थ के लिए
खून कर दिया है
तुम सुनोगे मेरी कहानी ?
मैं हूं साल-पुत्र
एक घने जंगल मे
परिवार के साथ
सुख और आनंद से रहता था।

अचानक एक दिन
कुछ मजदूर आये
साथ में मूछो वाला
एक मोटा आदमी आया
उसने मुझे काटने का इशारा किया
हमें काटकर गिरा दिया गया
मेरी मां चीखती हुई ज़मीन पर गिरी

मेरे पिता खूंटी बनकर
जमीन में दफन हो गये
मेरे भाई-बहनो को काटकर
अलग फेंक दिया गया
मैं धूप में सूख कर
पीला हो गया
मां को रोते हुए
ट्रक पर लदते देखा
पिता के आंसू जमीन पर बहते देखा
मुझ पर बसने वाले पक्षी भी
मेरी दुर्दशा पर आंसू बहा रहे थे
बाद में मेरे भाई-बहनों को
एक बुढ़िया गट्ठर बनाकर
शहर मे बेचने ले गई
मैं हवा में कब से
निरर्थक भटक रहा हू
मेरी मां कारखाने में कैद है
और मौत का इंतजार
कर रही है।

मैंने देखा
पत्ता सचमुच
दुःख और क्षोभ से भरा हुआ
रो रहा था
और हवा में इधर-उधर फडफड़ा रहा था
मुझे लगा पत्ते के साथ मैं भी
आकाश में
उड़ता जा रहा हू।

•

बन्दूक की कोई जाति नहीं होती

बन्दूक
गोलियां
या बारूद की
कोई जाति नहीं होती।

नहीं होते ये
हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख या
ईसाई।

पर उगलते हैं आग
जब थाम लेते हैं
इनमें से कोई हाथ
बन्दूक, बारूद या
गोलियां।
तब वह उठती है जमीन पर
लाल रक्त की एक धारा
जो किसी हिन्दू, मुसलमान, सिक्ख या
ईसाई की हो सकती है।
तब हथियार, जाति और खून
मिलकर बन जाती हैं कई जातियां
सम्प्रदाय और भाषा
जो कहलाती है
हिंसा, कट्टरता और धार्मिक उन्माद।

•

व्यवस्था के खिलाफ

गर्म हवा थम जाएगी
एक दिन
उड़ता रहेगा
आकाश पर
उसका बवंडर
धूल, कागज और
सूखा पत्ता
उड़ता हुआ
एक दिन
ज़मीन पर आकर
गिर पड़ेगा।

इसी तरह एक दिन
सूखे पत्ते की तरह
आकाश की ओर
उड़ जाएगी
गदी व्यवस्था
बहुत ऊपर उठकर
सतह पर गिर पड़ेगी
जहां से
ठंडी हवा का चलना
शुरू होगा।

•

एक युद्ध मैं लड़ता हूं रोज

एक युद्ध मैं
लड़ता हूं रोज
अपनी ही सीमा में
अपनी सेना लेकर
खड़ा हो जाता हूं
बजा देता हूं शंख
पर मेरी प्रतिद्वन्दी सेना
कहीं दिखाई नहीं देती।

मेरी रगों में
युद्ध का उन्माद
अक्सर इतना तेज हो जाता है कि
मेरा हाथ
म्यान में पड़ी तलवार पर चला जाता है
मैं जिरह-बख़्तर पहनकर
रक्त-तिलक लगाकर
युद्ध के लिए तैयार हो जाता हूं।
पर मुझे कभी कोई
युद्ध के लिए ललकारता नहीं है
कोई सेना युद्ध के लिए
हुंकार नहीं भरती
न ही कोई सेनापति
हाथी पर बैठकर

मेरे सामने आता है
फिर भी मेरा सग्राम तो
चलता ही रहता है।

युद्ध में मेरे हारने और
जीतने का प्रश्न
कभी नहीं उठा
न मैं घायल होकर
कोई संधि करने को
लाचार हुआ
न लाशों की ढेर देखकर
क्षुब्ध हुआ हूं।

मेरा युद्ध तो
ऐसा है
जिसमे सेना नहीं है
शखनाद नहीं है
सेनापति, तलवार, जिरह-बख़्तर या
हाथी नहीं है।

मेरा युद्ध- खुद मुझसे है
जिसका निर्णय
हारने-जीतने
या सधि से नहीं हो सकता
न ही यह युद्ध कभी
खत्म हो सकता है।

•

एक लड़की रंजना

एक लड़की रंजना
मुझसे पूछती है
दुनिया का आकार
मैं रंजना के
भोलेपन में भटक जाता हूं
और ढूंढने लगता हूं
दुनिया का आकार।

वह भोली रंजना
जिसने अभी-अभी बोलना सीखा है
पूछती है- आदमी का प्रकार।
भोली रंजना
प्रश्न पूछकर
निर्भाव हो जाती है
पर मैं भटक जाता हूं
भावो के बीहड़ जंगल मे
टटोलने के लिए
अपने भावो को।
रंजना के प्रश्न और मेरी भटकन का
कोई मेल नहीं है
फिर भी मुझे कहना पड़ता है
ओ ! भोली रजना
तुम दुनिया का आकार जानकर क्या करोगी ?

क्या करोगी जानकर- आदमियों के प्रकार
तुम जानो अपने विचारों की ऊंचाई
नापो अपने अस्तित्व के आयतन को
देखो तुम
कितनी परिधि में खड़ी हो
और कितनी ज़मीन चाहिए तुम्हे
तुम्हारी सोच की लंबाई कितनी है !
रंजना
तुम अपने मन का आकार देखो
क्या मिलेगा तुम्हे
दुनिया का आकार जानकर
रंजना
यह तुम्हारी समझ से
अभी बहुत दूर है।

सुनो रंजना
क्या तुम्हें मेरी बात सुनाई पड़ रही है ?

मैं निरंतर बोल रहा हूं
मेरी आवाज
शायद रंजना तक
पहुंच और न भी पहुंच रही है।

लेकिन रंजना
बिना पलक झपकाये
शून्य में देख रही है।

•

पहचान

अगर चाहूं तो
मैं अपनी परछाई और
दुनिया के बीच
खड़ा कर सकता हूं
अनगिनत लावारिस
इच्छाओं का त्रिफल
और बैठा सकता हूं उसमें
टक-टकी लगाये
असंख्य आंखों का अंबार
इसके बावजूद मैं
किसी भी आंख में
रोशनी नहीं डाल सकता।

अगर चाहूं तो
मैं भी
इंतजार करती
बदहवास भागती हुई
किन्तु
थरथराती जिन्दगियों को
एक ठहराव दे सकता हूं
जगा सकता हूं
मृत्यु को भी गहरी [illegible]
मर्यादितों को [illegible]

झुण्ड में चलते लोगों को
कोई राह दे सकता हूं।

मैं चाहूं तो पहचान सकता हूं
कोहरे की आड लेकर
भागते हुए लोगो के चेहरे
रेशे-रेशे में गूजती हुई
उनके विकारों को जान सकता हूं
जान सकता हूं
दियासलाई लेकर
घासलेट तलाशते हुए
लोगों के नकाब लगे चेहरे।

पर मैं खुद
एक बाड़े मे बंद कर दिया गया हूं
असंख्य लोग मेरे साथ
बेबसी की चादर के नीचे
तिलमिलाते हुए/पशुओं की तरह
जुगाली करने को मजबूर हैं
और मैं मजबूर हूं
उनके दुखों के मुख पर
शख रख देने के लिए
और धुआं-धुआं होते हुए
ध्वनियों को सुनने के लिए।

•

अस्तित्व

रेल की पटरियों की तरह
मेरा अस्तित्व पसर गया है
यहां से वहां तक
और नियति
रेल की तरह निकल जाती है
धड़धड़ाती।

मैं सिमट जाता हूं
आकाश की मुट्ठी में
और देखता हूं
जमीन को
जो बेहद दर्द भरी नजर से
मुझे निहारती है।

मैं तोड़ना चाहता हूं
बेमौसम कोहरे को
और फैलाना चाहता हूं धूप
जो असंभव प्रश्न की तरह
मेरी पीठ पर लद जाती है
जिसका हल मेरे पास नहीं है।

शहर के सन्नाटे से
गुजरता मैं
अस्तित्व की तलाश में भटकता हुआ
दूसरों का सबूत बन जाता हूं।

ज़िदंगियों के जंगल में
तलाश करने पर भी
मेरा अस्तित्व नहीं मिलता
मिलता है सिर्फ
अस्तित्व की जगह-
एक भटकन
एक सन्नाटा
एक निराशा।

•

प्रश्न

एक प्रश्न मेरे सामने खड़ा है
और पूछता है- मैं कौन हूं ?
मैं सोचता हूं- मैं कौन हूं ?
और समा जाता हूं
प्रश्न के अंधेरे में।

प्रश्न फिर पूछता है - मैं कौन हूं ?
मैंने कहा- मैं आकाश हूं !
वह हंसा
तुम आकाश नहीं
कागज का एक टुकड़ा हो

मैं फिर सोचता हूं- मैं कौन हूं ?
अंतरात्मा से आवाज आई- मैं हवा हूं !
प्रश्न हंसा और जोर से खिलखिलाया
वह बोला- तुम न आकाश हो न हवा न जंगल
सिर्फ तुम आंसू हो
जो ढूंढता है आंखें
और रोने के बहाने।
मैं सोचता हूं
उत्तर के निष्कर्ष पर
विचार करता हुआ
उसकी गहराई में धंसता चला जाता हूं।

•

प्रेम की लकीर

अगर मैं पढ़ सकता
अपनी हाथ की रेखाएं
तो सबसे पहले
हाथ पर खींची हुई
प्रेम की लकीरें पढ़ता
तुम्हारे प्यार की रेखा
जहां पर बनी है
बहुत गौर से देखता
निहारता
और मुस्कराता
कहता
ओ मेरी प्रिया ।
बात करता
उस लकीर से
जो मेरी हथेली पर
उभरी है
भींच लेता मुठ्ठी
जैसे कुछ इस तरह
कि तुम मेरी मुठ्ठी में
समा गई हो
सदा के लिए।

अगर मैं पढ़ सकता
अपनी हाथ की लकीर को

तो सबसे पहले पढ़ता
तुमसे बिछुड़ने वाली
रेखा को
प्रेम की रेखा की तरह
आने वाली हर प्रतिरोधी रेखाओं को
ढाल बनकर रोक सकता।
रोक सकता-
तुम्हारे हंसने-मुस्कराने
और खुशियों के बीच के
लकीरों पर पड़ने वाले किसी क्रॉस को।

पर मैं हूं
रेखाओं के बीच
गतिशील एक मोहरा
जो मेरे ही हाथों पर
मुझसे ही बहुत बड़ा
प्रतिवाद/छल और विद्रोह करता है।

मेरी हथेली
खुलने या बंद
होने के बीच
फर्क हो या न हो
मैं नियति की बिसात पर
मोहरा बन जाता हूं
चलता रहता है- निरंतर
न ठहरने वाला खेल
सुबह/दोपहर/शाम

काश! मैं पढ़ सकता
हथेली पर लिखी
प्रेम की लकीरें।

•

तुमसे अलग होकर

तुमसे अलग होकर
ऐसा लगा
असख्य तारों के बीच टिका मैं
तारों के बीच से टूटकर
पाताल की ओर
गिरता जा रहा हूं
जहां न
सागर की सीमा है
और न जमीन का
कोई छोर।

जहां पर
मैं आकर गिरूंगा
वह होगा
घनी आबादियों का देश
कल्पना के लोक में
उड़ने वाला एक परिंदा
गंदी मुंडेर पर आकर बैठ जायेगा।

तुमसे अलग होकर
ऐसा लगा- जैसे मेरी भावनाएं
और विचार किसी ने छीन लिए हो
जिसके सहारे
मेरी रचनाएं

सजीवता पाती थी
अब मेरी रचनाएं
कितनी कठोर
कर्कश और
उदास हो गई हैं।

आज तुमसे
अलग होकर
ऐसा लगा
सड़कों पर चलता मैं
जैसे किसी जंगल में
चल रहा हूं
जिसके पत्तों में लोग
टंक गये हैं
और तनों में
मकानें सिमट आई हैं
अस्तित्वहीन यह शहर
तुमसे अलग होकर
अनाथ हो गया है।

•

एक शताब्दी बाद

एक शताब्दी बाद
न मैं रहूंगा,
न मेरी
कविता रहेगी
न ऐसा चमन रहेगा
न इतनी सुहानी
शाम रहेगी
एक युग बाद
मैं मिट जाऊगा
मेरी आवाज
मिट जाएगी।

तब ऐसा लगेगा
मैं इस संसार को
अपने जीवन काल में
कुछ न दे सका
लेता रहा हूं- असख्य सुख
जो मेरे दामन मे नहीं समा पाते।
तुमने सुना होगा- मैंने दुनिया से कहा है
कि मैं चौराहे पर टंगी एक भद्दी तस्वीर हूं
जिसे लोग देखते हैं
और चुपचाप चले जाते है
न रोते है, न हंसते हैं।
मैं जानता हू

न मैं रोने की चीज हू
न हंसने की
एक युग बाद
शायद लोग
समझ पायेंगे।

एक शताब्दी बाद
न मैं रहूंगा
न मेरी कविता रहेगी
लेकिन यह आकाश जिंदा रहेगा
और यह जमीन जिंदा रहेगी
जो यह अहसास करायेगी
कि बहुत पहले
एक शख़्स
यहां बैठकर
कविता लिखता था
और गुनगुनाता था
अपनी कविता
एक युग बाद
हवा में
मेरी कविता की खुशबू फैलेगी
यह बताने के लिए
कि मैं जिंदा था
और कविता लिखता था।

•

लड़कियों को कतारबद्ध होने दो

दुनिया
लड़की भी
बदल सकती है
तभी तो
दुनिया बदलती हैं
लड़कियां
गिरा सकती हैं दीवारें
लांघ सकती है
सागरों की दूरिया
इसलिए लोगो !
लड़कियों को कतारबद्ध
होने दो।

परम्पराएं
तोड़ने दो उन्हें
उड़ाने दो धज्जियां
झूठे रिवाजों की
मुक्त हवा में
सांस लेने दो
इसलिए कि
लड़कियां
सूत की डोरियां
नहीं हैं
कि चरखों के पहियों में

लपेटकर
कमरे में सुरक्षित
रखते हो तुम।

लड़कियां
मौसमों के बीच की
एक मौसम हैं
जो तुम्हारे आंगन में
उतर आती है
चुपचाप
जिस तरह
महकते हैं
बगिया के फूल
तुम्हारे आंगन में
जिस तरह महकते हैं
मोगरे
गुलाब या कि
चमेली
ये क्यारियां
ये डालियां
ये कलियां
इसी तरह होती हैं
तुम्हारे आंगन में
लड़कियां।

लोगो !
लड़कियों को
कतारबद्ध होने दो।

लिबास

मैं बंद हो गया हू
अपने ही सिले लिबास में
मेरे हाथ
डूब गये हैं
लम्बी आस्तीनों के
सैलाब में
मेरा गला फंसा हुआ है
नेक टाई की जकडन से
मेरा दम
घुट रहा है
लिबास की तपिश से
ऐ आजाद हवाओ
मुझे बाहर निकालो।

एक अरसे से
मैं लिबास में
बंद हूं
दुर्गंध भरे परिवेश मे
जी रहा हूं
सोचने के लिए
विचार भी नहीं हैं।
चिडियो !
अपने कोमल परों के नीचे
मुझे छिपा लो

या फिर
ले चलो मुझे
अनंत आकाश में
जहां तुम्हारा
खूबसूरत जीवन है
चिड़ियो !
तुम्हारे आकाश में
खुली हवा होगी
दुर्गन्धहीन परिवेश होगा
जहां मैं
अपना लिबास
निकाल कर
फेंक सकूंगा
सफेद बर्फ की तरह
विचार मिल सकेगा
जहां मैं
सोच पाऊंगा।

ए चिड़ियो !
मुझे ले चलो
अपने आकाश में
मैं अपनी जमीन त्यागकर
तुम्हारे साथ
रहना चाहता हूं।

•

राजा : एक

सहसा
राजा ने एक
अगड़ाई ली
और अनगिनत
संगीत की लहरें
निकल पड़ीं।

सहसा
राजा ने हुंकार भरी
कि नगर में
बेलौस सन्नाटा
पसर गया।
सहसा
राजा ने ठहाका लगाया
और महल
झनझनाहट से भर उठा।

सहसा
राजा ने
क्रोध से त्यौरिया चढ़ाई
कि हजारों
रियायाओं पर
कहर गिर पड़ा।

राजा : दो

राजा
जो कभी रोता नहीं
राजा
कभी रोटी की चिंता
नहीं करता।

राजा
जाता नहीं है कभी
अपने बच्चों की
फीस अदा करने
राजा
घासलेट के लिए
कभी क्यू में
खड़ा नहीं होता।
राजा
बसों के बढ़ते किराये पर
झुंझलाहट से
नहीं भरता
राजा
नहीं होता है
उदास।

लेकिन
जब राजा का

वक्त खराब होता है
तो राजा
रियाआ की
अदालत के कटघरे में
निरीह खड़ा होता है
जनसमूह के सामने
घुटने टेक देता है
काम नहीं आती
राजा की अकूत दौलत
तांत्रिक की विद्या
धरी रह जाती है
जो उगाता था कभी
अपनी मर्जी का सूरज।

कितना लाचार
हो जाता है राजा
कभी इस अदालत की
तो कभी उस अदालत की
शरण लेता है
राजा।

तब झुक जाता है राजा
वक्त के आगे
जब हुंकार उठती है
रियाआ !

•

तुम्हारे घर में

तुम्हारे घर में
एक आगन्तुक की तरह
आवाज देकर
जिन्दगी खडी थी
क्या तुमने पहचाना उसे
तुम्हारे पहचानने और
उसे तुम्हारा इंतजार करने में
जितनी देर लगी
उतनी देर में जिंदगी के
कई रंग बदल चुके थे।

तुम्हारे घर के दालान में
जो बिल्लियों का जोड़ा था
उसे देखकर
तुम्हारी आंखों का तन जाना
बेहद बुरा लगता होगा
मासूम बिल्लियों को
जबकि
वे बिल्लियां
तुम्हारे बच्चों की गोद में खेलकर
इतनी ढीठ हो गई हैं कि
तुम्हारा उनकी पूंछ पकड़कर
फेंकना बुरा नहीं लगता
बल्कि स्नेहयुक्त हो जाता है।

तुम्हारे घर में
बिना दस्तक दिये
अचानक समय
चला आता है
और तुम सोचते रह जाते हो
समय से
दो-चार बातें करना
पर समय
तुम्हारे सोचने के दौरान
चुपचाप चला जाता है।

तुम्हारे घर में
प्यार
फूलों की क्यारियों में
कई बार मुस्कराया था
तुम उसे हवा समझकर
अनदेखा कर चुके थे
और खुद ही
वंचित हो गये थे
एक मधुर, मीठी प्यार भरी
प्यार को पाने से पहले।

तुम्हारे घर में
जिंदगी
समय और प्यार
सब कुछ था
जिसे तुम तलाशते फिरते थे
बेतहाशा भागती हुई
सड़क पर।

•

तुम्हारे साथ

तुम्हारे साथ
अक्सर मुझे ऐसा महसूस हुआ था
कि दिशाएं पास आ गई हैं
हर लंबा सफर छोटा हो गया है
हर मुश्किल राह
आसान हो गई है
हर शाम जो उदास थी
एक खुशनुमा फ़िज़ां-सी
महक उठी है।

तुम्हारे साथ रह कर
बीते हुए छोटे से पल ने भी
पहाड़ सी मुसीबत को
छोटा बना दिया है
अनेक तूफ़ान आने पर भी
बचता रहा हूं मैं
तुम्हारे प्यार की ठंडी छांव में
धूप की तेजी
महसूस नहीं होती।

तुम्हारे साथ रहकर
अक्सर मुझे महसूस हुआ है
कि हर सांस में
जीने की इच्छा जागी है

हर पल उमंग से सराबोर हो उठा है
हर दिन
तुम्हारे चाहत का पैगाम लेकर आता है
और मैं
खो जाता हूं
चाहत के घने कोहरे में
तुम्हारा असीम प्यार पाकर।
तुम्हारे साथ रह कर
मैंने महसूस किया है
कि हर बात का
कोई मतलब है
हर सांस की कीमत है
हर एक छोटा-पल भी
बरसों के समान
महत्वपूर्ण है
जैसे एक पल के खोने-से
खो जाता हो
एक बरस।

तुम्हारे साथ रहकर
एक परिभाषा
अपने लिए पायी है
और मुझे ऐसा लगता है
कि हर रोज चांदनी
स्कार्फ बनकर
बध जाती है तुम्हारे
बालों पर।

•

शिनाख़्त

दुनिया के एक मुहाने पर मैं खड़ा हूं
सारी दुनिया एक कतार में खड़ी हो गई है।

मेरे सामने खड़ा है जिंदा सा एक शहर
जिंदे से लोग/जिंदी हवा/जिंदी भाषा
इस शहर में एक मंदिर है
एक मस्जिद और एक गिरजाघर।
एक आदमी
मंदिर की घंटियां बजा रहा है,
ओम नमः शिवाय का जाप कर रहा है
एक मस्जिद में
सफेद कामदार टोपी पहनकर
अल्ला-हू-अकबार का अजान लगा रहा है।

एक मोटी किताब हाथ में रखे हुए
मोमबत्ती के सामने
दोनों हाथ उठाकर 'आमीन' कह रहा है।

मैं देख रहा हूं- शहर में
तीन बच्चे स्कूल जा रहे हैं
एक के माथे पर तिलक लगी हुई है
एक सफेद टोपी पहना हुआ है
एक के गले में क्रॉस की लॉकेट
कमीज के बाहर लटक रही है।

मैं देख रहा हू
शहर को
शहर के शिद्दत से भरे लोगों को
जहां इंसान की अलग-अलग पहचान है
अगर तुम चाहोगे- किसी आदमी को ढूंढना
तो वहां कोई आदमी नहीं
रामसिंह, मुबारक अली और माइकल मिलेगा
अगर तुम चाहोगे किसी आदमी से मिलना
तो तुम्हे
या तो तिलक लगाना पड़ेगा/या सफेद टोपी धारण करोगे
या फिर क्रॉस की लॉकेट गले में लटकाओगे
मेरे दोस्त
तभी तुम अपनी पहचान यहां बना पाओगे
दरअसल मेरे दोस्त
इस शहर में इंसानों की यही पहचान है
यदि तुम अपना
अस्तित्व और अस्मिता दोनों ही बचाना
और बनाना चाहते हो
तो तुम्हें किसी खेमे में जाना पड़ेगा
क्योंकि मेरे दोस्त
बिना पहचान के तुम यहां बेमौत मार दिये जाओगे
और जब तुम मार दिये जाओगे
तो तुम्हारी मौत पर आंसू बहाने वाला कोई नहीं होगा
तुम्हारे जिस्म पर किसी धर्म की निशानी नहीं है
यह अच्छी तरह समझ लेना मेरे दोस्त
इस शहर में धर्म की शिनाख़्त होती है- इंसान की नहीं
यह अच्छी तरह मालूम है कि
तुम किसी धर्म के अलम्बरदार नहीं हो
इसलिए तुम्हें यह तय करना है कि
तुम किस तरह
इस शहर में आते हो।

•

सच

हम जिस ओर
जा रहे हैं
उस तरफ कभी कोई रास्ता
नहीं था
हंम जिस ओर जा रहे हैं
उधर कभी किसी ने
जाने की जरूरत
महसूस नहीं की
यह जानते हुए भी कि
जीवन और कुछ नहीं
मृत्यु है
और मृत्यु एक
जाना पहचाना सच है
लकड़ी की एक सलीब है
जो हमारे कंधों पर
लदी है।
अदृश्य सा हर वक्त
मृत्यु का सच
जो कहीं खो गया है
क्योंकि हमारी आंखें
बगैर नींद के
मुंद गई हैं।

बच्चे का आकाश

बच्चे
तुम अपनी मुट्ठी में कस लो
अपना आकाश और कदम
वहां पर जमा लो
जहां तुम खड़े हो
गिरने दो पसीने की बूंदें
वहीं पर- क्योंकि उस जगह पर कभी
कोई पौधा उगेगा
जो तुम्हारे पसीने को करेगा साकार।

तुम्हें अपनी परिधि पहचानकर
एक घेरा बना लेना चाहिए
क्योंकि कल तुमको
अपने दायरे की तलाश होगी
जो इतनी भीड़ में
न जाने कहां पर मिलेगी।

इसलिए बच्चे
अपने लिए पौधा तैयार करो
जो तुम्हारे बड़े होने पर
उसकी पत्तियां इतनी हरी हो जाएं
कि तुम चाहो तो पत्तियों को तोड़कर
आकाश में उछाल सकते हो
दूसरों की मुक्ति के लिए।

•

रहमत

चलो रहमत
उस तरफ चलो
जहां हमारे पैरों के निशां
कभी न पड़ें हों
जहां पर तुम कभी
उदास नहीं होगे
जहां पर मैं कभी
भय से पीला न पड़ूंगा।

रहमत तुमने बताया था मुझे
वह जगह जहां तुम
बचपन में
बरसाती नाले में
कागज की नाव
बहाते थे।

उस स्थान पर
मुझे तुम
क्यो नहीं ले चलते
रहमत
शायद इसलिए कि
वहां पर
तुम्हारी कौम की
टूटी हुई मस्जिद है।

चलो रहमत
मैं तुम्हारी टूटी हुई
मस्जिद की मीनारें
देखना चाहता हूं
उस खुदा को
याद करना चाहता हूं
जो कभी वहां रहता था
टूटी हुई ईंटों को देखकर
मीनार बनाने वाले
हाथों की तारीफ
करना चाहता हूं।

रहमत
मैं उस जमीन की
इबादत करना चाहता हूं
जिस जमीन पर
तुम्हारी मस्जिद बनी है
रहमत
तुम मेरा निर्णय सुनकर
कांप क्यों उठे
क्यों मुझे दहशत भरी
नजरों से देखने लगे ?

•

मेरे लिए विरासत में

मेरे लिए
विरासत में
तुमने सिर्फ एक रंग छोड़ा है
जो चटक लाल है
रंगता है हर दिन
मेरे, तुम्हारे और
तमाम लोगों के चेहरे।

तुमने छोड़ी है
बारूद की एक पोटली
माचिस की एक तीली
छोड़कर
अमानत की तरह
रखने की
हिदायत दे गये थे
यह अमानत मैं छोड़कर
भाग पड़ा था
अंधेरी दिशा की ओर।

बस्तियों में
बाजारों मे
स्कूलों में
एक कोलाहल
मेरे लिए छोड दिया था तुमने

हलचल
भगदड़ और
जहरीली हवाओं के बीच
मैं समेटे बैठा हूं
अपनी विरासत
बांटता हू
फेकता हूं
लुटाता हूं
और परिणति की
प्रतीक्षा
दिन-रात
अखबारों में
करता हू।

•

जंगल

जंगल
मेरी मां की बूढ़ी आंखों में
समाया हुआ था
जंगल
जो मेरे पिता के अरमानों का प्रतिमान था
नानी द्वारा सुनाई गई कहानियों का खौफ था
वह जंगल
हाहाकार का आर्तनाद करता हुआ
मेरे बचपन से जवानी तक के
सोच का उत्पीड़न बन चुका है।

जंगल
एक चिड़िया के कलरव से
शुरू होती थी जिसकी गुंजन
एक ठंडी हवा जो- चुपके से घुस आती थी
खिड़कियों के रास्ते मेरे कमरे में
कंपित कर देती थी मुझे
और मैं निहार पड़ता था
हरे छतराये जगल को
यह मेरे बचपन का जंगल था
आज छीजता जंगल
खिड़कियो के पार
दिखलाई पडता है
झाड़ियों का एक मैदान

जिसे कहते है- पतरस, झुरमुट या झंखाड़
यह जगल है
जिसे देखेंगी मेरी पीढ़ियां
या कि कंकरीट का एक जगल
पसरा होगा उनकी
खिड़कियों के पार
या होगी सिर्फ
ड्राइग रूम की दीवार पर
जंगल की कोई तस्वीर।

जगल जो आबाद था
साल/शीशम या सागौन की कतारों से
जहां अब आबाद होते हैं
मिलों के बढ़ते दायरे
जहां समाते हुए
पेड़ों के जिस्म मुर्दा बन कर
चमकती हुई दरातियों में चढ़कर
मोक्ष पा रहे हैं
रह जाती है- बुरादों के रूप में अवशेष
रक्त की तरह
जो चूल्हों, भट्ठियों मे सुलग कर
लाल तो फिर काली होती जाती है
रहेगी सिर्फ एक याद
जगल
मेरी स्मृति में
जब चला जायेगा
जगल अपने वजूद से
मेरी तुम्हारी स्वप्निल आंखों से
तब कहूंगा जंगल
फना होने से पहले
एक दिन आना जरूर
मेरे सपने मे।

•

आसमान : तीन संदर्भ

एक

आसमान
चुप हो
या गरजता
बरसता हो
लेकिन इसकी
सीमाओं की छोर
उसी तरह
लटक रही है
धरती पर
जहां चुप है कोहरा
अंधी हो गई है धूप
वहीं पर आसमान
दम तोड़ता है
खून से लथपथ
किसी आदमी की तरह।

दो

हवा
इधर और उधर
अनजान दरख़्त
अपरिचित पगडंडियां
उम्मीद केवल यह है कि

आवाज के सिहरन
के साथ
घासों के जंगल में
हरे कीड़े सा
छुप गया है
आसमान।

तीन
नीला
सफेद
तो कभी
हो उठता है
काला आसमान
अपने आंसुओं को
पी जाता है
तो कभी
बहा देता है
धरती पर
अपने असंख्य आंसू।

•

मां के लिए

मां
मेरे लिए
तुम्हारी गोद
कभी खाली नहीं होती होगी
मेरा ख्याल
तुम्हारे मन से
कभी जुदा भी नहीं होता होगा
मेरा दुख
समेटते हुए
तुम्हारा आंचल
नहीं भर पाता होगा।

पर मां
तुम समेटती रहती हो
अपने हिस्से का दुख
और खोती जाती हो
अपना सुख
मैं इतना निरीह कि
चाहते हुए भी
तुम्हारी झोली में
कोई सुख
नहीं डाल पाता।

तुम्हारे सानिध्य में मां
मैंने देखा है

तुम्हारी धरती की तरह
सहनशीलता
एक गौरय्ये की तरह
दाना उठाना
और अपना पेट
भरने से पहले
चूजों का पेट भरना
देखा है मां
इसी तरह
तुम्हारे जीने के तरीके को।
बहुत अजीब लगता है
जब तुम मेरे कहीं
जाने पर
एक टक
निहारती होगी सड़क
और हर आने वालों में
मेरा ही चेहरा
दिखाई पड़ता होगा तुम्हें

पर मुझे
सिनेमा हॉल की
सीट पर बैठे हुए
तुम्हारा चेहरा
अंश भर भी
याद नहीं आयेगा
मैं नहीं सोच पाऊंगा मां
कि तुमने मेरा
कई घटे तक
भूखे बैठकर
इंतजार किया है

मुझे नहीं मालूम है मां
कि तुमने मेरे लिए
कितनी आशाएं लगा रखी हैं

याद नहीं है कि
तुमने मेरे लिए
कितनी रातें
जागते हुए
बिताई हैं
कितने उपवास रख कर
मेरे लिए
मन्नतें मांगी हैं
मेरी हजार गलतियों पर
परदे डालकर
पिता के गुस्से को
कम किया है।

पर मां
मैं जानता हूं
तुम्हारा दुःख
तुम्हारी धरती की तरह
चुपचाप सहने की
आदत को
तुम्हारे विशाल हृदय में
छिपे हुए
मेरे लिए
असीमित प्यार को।

पर मां
मेरे शरीर का रक्त
न जाने कब का
बदल चुका है
तुमसे इतनी दूर
आकर
जैसे पत्र लिखने का भी
वक्त सिमट गया है
पूरी ज़िन्दगी का हिसाब
ऑफिस में

बच्चों की पढ़ाई में
पत्नी की फरमाइशो में
विभाजित है
शेष रह गई है
मेरे लिए
तुम्हारी स्मृति
और शेष है सिर्फ
तुम्हारे लिए
मेरी प्रतीक्षा।

•

सुबह की त्रासदी

अभी कोई
गिलहरी
आंगन में थिरक रही है
अभी कोई
खरगोश
हरी दूबों में
सिर छिपाकर
घास कुतर रहा है
अभी कोई चूजा
अण्डे तोड़कर
बाहर की दुनिया में
सांस ले रहा है।
अभी कोई आदमी
रात के सपनों में
खोया हुआ है
रात
आदमी और
सपना
सुबह की त्रासदी से
बेखबर हैं।

•

बिजूका और आदमी

सुनहले खेत पर
खड़ा है बिजूका
हवा के थपेड़ो के साथ लहरा रहे हैं
उसके सिर और हाथ
पके हुए दानों को
चुग रही हैं निडर गौरय्या
देख रहा है खामोश खड़ा बिजूका।

ज़मीन पर
खड़ा है आदमी
आसपास बिखरे हैं दाने
जिसे चुग रहे हैं
बेखौफ होकर
कौवे/चील और गिद्ध
चुपचाप खड़ा है आदमी
बिजूके की तरह
जो देख रहा है
कौवे/चील और गिद्ध का
दाना चुगना
जमीन से लेकर खेत तक
बिजूके और आदमी में
कोई बुनियादी फर्क
दिखाई नहीं देता।

•

इसी तरह गिरती रहेंगी बिजलियां

काश !
बिजली वहां गिरती
जहां पर
बेबस किसानों के खिलाफ
षड्यंत्र रचे जा रहे हों।

काश ! बिजली वहां गिरती
जहां पर
मासूम बच्चों के हकों का सौदा हो रहा हो
जहां पर
इंसानी रिश्तों की परतें
चाकू से कुरेदी जा रही हों
जहां पर
मुरदों के जिस्म से भी
कफन उतार लिये जाते हों
हां बिजली
वहां पर गिरती
जहां पर मजदूरों के पसीने भी
खून में तब्दील कर दिये जाते हों।

पर बिजली वहां गिरती है
जहां एक
भूखा-प्यासा किसान
सुबह से शाम तक

अंतड़ियों में सटे हुए पेट लिए
हल जोतता है।
बिजली वहां पर गिरती है
जहां पर
कोई बूढी माई
जंगल से दातुन तोड़कर
पेट भरने का इंतजाम करती है।

बिजली वहां गिरती है
जहा पर कोई मजदूर
ऊची इमारत पर
गारे की तगाड़ी
पहुंचाते हुए
रोज की जिन्दगी में
फना हो जाता है।

पर बिजली गिरती है
गिरती रहेगी
जिस तरह गिरती रही है
कहीं इसकी परिभाषा
अर्थ या नियति में
परिवर्तन नहीं होगा
जिस तरह होती है
दिन के बाद रात
उसी तरह
उजाले को अंधेरे में
तब्दील करती रहेंगी
बिजलियां।

•

खिड़की

मेरे आंगन में
पड़ोस की खिड़की से झांकती लड़की
हर रोज एक नया लिबास पहनकर
मुझे लुभाने का प्रयास करती है।

वह लड़की छोटी नाक की ही सही
कहीं अंश भर खूबसूरत जरूर है।
कभी बहुत देर से तो
कभी बहुत जल्दी प्रकट होती है
कभी उसके हाथ में
आलू और चाकू होता है
मेरे आंगन की तरफ देखते हुए
सब्जियां काटती है।

वह कभी खोई-खोई रहती है
तो कभी बहुत चमक भरे
चेहरे से मुझे निहारती है।
कुछ दिनों से वह लड़की
खिड़की पर नजर नहीं आती है
मेरी निगाहे बार-बार उसे तलाशती हैं।
और एक दिन मुझे पता चला
उसकी शादी कर दी गई है-
उसकी मर्जी के खिलाफ।

•

पेड़ की तरह तुम्हारा प्यार

तुम्हारा प्यार
एक विशाल पेड़ की तरह है
और मैं
एक छोटा पत्ता बनकर
टँक जाता हूं
तुम्हारे जिस्म में।

तुम्हारे प्यार के साथ
मैं अकुरता हूं
हरेपन से भरता हूं
पल्लवित होता हू
लहराता हूं
हवा के साथ
तुम्हारे जिस्म को
छूता हूं बार-बार।
तुम्हारे प्यार के साथ
हंसना
बोलना
हिलना
पूरी तरह
निर्भर है।

मेरा सूखना
शाख से टूटना

या टूटकर
हवा के साथ
कहीं खो जाना
तुम्हारे प्यार की
रुखाई या बेवफाई की परिणति है।
मैं शाख पर टँका हुआ।
एकटक निहारता हूं तुम्हें
तुम्हारे प्यार की विशालता देखकर
शर्मिन्दगी से भर उठता हूं
मैं क्षण प्रतिक्षण हिलता हुआ
सरगोशी करता हुआ
खामोश रह जाता हूं।

तुम्हारा प्यार
मुझे किस तरह हरा बना देता है
किस तरह मैं पल्लवित होता हूं
डालियों से टकराता हूं
बार-बार पुकारता हूं तुम्हें
कि मुझे अनंत प्यार से भर दो
तब न टूटूंगा कभी- तुम्हारी डाल से
न सूख कर पीला बनूंगा
न कभी जालिम हवाएं
मुझे तोड़ कर
कहीं उड़ा ले जाएंगी।
तुम्हारे प्यार के लिए
मैं पुन:लौट पडूंगा
यह कहते हुए कि
तुम्हारा प्यार एक विशाल पेड़ है
और मैं पत्ते बन कर
टँक गया हूं
तुम्हारे जिस्म से।

•

प्रतीक्षा में

चिड़ियों के
समाज में रहकर
चिड़ियों के परों के समान
पंख-दर-पंख
टूटता जा रहा है- हमारा विश्वास।

वह विश्वास- जो समुद्र की तरह
अथाह/असीमित और विराट था
सूखता जा रहा है
बरसाती ताल की तरह
शायद इसलिए कि हमारे नेतृत्व की रास
चीलों के हाथ में चली गई है।

जहां सीमाएं
बन्दूक की नोक पर निर्धारित हैं
हर शब्द गोलियों की बौछार हैं
वहीं हम बनाते हैं घोसले
सेते हैं अण्डे
बच्चे तैयार करते हैं
इसलिए कि एक दिन झोंकना होगा
चीलों के झुण्डों को
जो अपने अधुनातन हथियारों के साथ
प्रतीक्षा मे हैं हर वक्त।

•

दरख़्त

दरख़्त तुम
अभी भी खड़े हो
नदी के किनारे सीढ़ियों के पास
सिर्फ एक फर्क आया है तुममें
इतने अरसे बाद
तुममें हरी पत्तियां नहीं है
घोंसले बुनती हुई चिड़िया नहीं है।
नहीं आती तुम्हारे पास
कोई लहराती हवा
नहीं टपकती बारिश की बूंद टप-टप
नहीं ठहरता कोई चरवाहा
बारिश से बचने के लिए
नहीं अटकती कोई पतंग
कटी हुई डोर से
तुम देख रहे हो दरख़्त
कि तुम्हारे नीचे की घास भी
कितनी सूख गई है
जानते हो दरख़्त
अब तुम दरख़्त नहीं
एक ठूंठ बन गये हो
बिल्कुल मेरे पिता की तरह
जो अब बूढे हो गये हैं।

•

हथियारों पर नाचती उंगलियां

जिस सड़क पर
तुम बहा रहे हो
निर्दोष लोगों के
खून की नदी
खेल रहे हो
खून की होली
याद रखो लेकिन
एक दिन मांगेगी
यही रक्त की नदियां
खून का बदला खून
की तर्ज पर/अपना हिसाब
हथियारों पर नाचती
तुम्हारी उंगलियां
तुम्हारे सीने पर ही
तन जायेंगी
क्योंकि
लहलुहान करने के लिए
अगली कोई छाती
बाकी नहीं बचेगी।

•

गांव के घर की याद

गांव के एक घर में
मेरी बचपन की
सारी कमाई रखी हुई है
टूटे हुए
टिन के बक्से में
होगी अभी भी गुलेल
गिल्ली, लट्टू और
साइकिल की फटी टायर।

और कोई पूंजी
नहीं मेरी
इन चार चीजों के अलावा
जिनके बीच
बचपन का सारा वक्त
गुजार चुका हूं
मेरे बचपन के
बक्से को
देखना चाहोगे
मेरे दोस्त
जिसमें रखा गया है
सहेज कर
रोटिया सेंकने का तवा
कुछ दुआएं

कविता के लिए
कुछ शब्द।

रोटिया सेंकने का तवा
मेरी मां की एकमात्र
निशानी है
थैले में दुआएं हैं
पिता की दी हुई
पुस्तकों के रूप में
स्कूल मास्टर के दिये हुए
कविता के लिए कुछ शब्द हैं
यही विरासत है मेरी
दोस्तो
जिसे तुम देखना चाहते हो
मेरी बचपन की याद में
कुछ परिन्दें हैं
इमली का विशाल दरख़्त है
और दरख़्त पर नाचती
पुश्तैनी गिलहरियां हैं
जिनका वंश
अभी भी चल रहा है
न जाने कौन उनका
बाप-दादा है
और कौन उनकी संताने
मेरे बचपन की गिलहरी
मेरे पिता के बचपन में थी
और कौन-सी गिलहरी
मेरी पैदाइश के समय मौजूद थी

मैं ढूंढता हूं उसे
इमली के दरख़्त पर
हर आती-जाती
गिलहरी में।

•

सड़क पर लड़कियां

हम जब देखते हैं
अपने आस-पास
तो दिखायी पड़ता है
अपने ही घर का संसार।
जब सड़क पर
गुजरती हैं
स्कूल जाती हुई
लड़कियां
तो दिखता है
उनके चेहरे पर
एक पिता का चेहरा
यूनिफार्म में पिता की हैसियत
टिफिन में
मां की विवशता।

लड़कियों के पीछे
एक पिता
खड़ा दिखाई देता है
कुछ इस तरह कि
उसकी सुरक्षा के लिए वह
उसके पीछे चल रहा हो।

हर लड़की के मुस्कराते
चेहरे पर

पिता का संघर्ष
दिखता है
कि इन चेहरों में
मुस्कान भरने के लिए
कितना संघर्ष
कर रहा है पिता
अपनी जिंदगी से।

अगर गौर से देखें
तो लड़कियां
सड़क पर नहीं
पिता की
प्रतिष्ठा के ऊपर
चल रही हैं.

•

धान रोपती हुई औरतें

घुटने तक
पानी में डूबी हुई
कीचड़ से सनी हुई
अधझुकी कतार मे
लयबद्ध कोई गीत
गा रही हैं
धान रोपती हुई औरतें

कोई गीत गा रही हैं
उत्सव का
कि पानी बरसो
और पानी बरसो
कि सारा खेत
पानी से भर जाए
गा रही हैं गीत
औरतें
कि उनकी रोजी-रोटी का
पुख़्ता इंतजाम हो जाये
शाम को काम खत्म होगा
मिलेगा काम के बदले अनाज
और कुछ रुपये
घर में प्रतीक्षारत होंगे
बच्चे/मायें पिता और
कुछ निठल्ले पति।

इन औरतों की रात
देखती होती हैं
कुछ आखें
इसलिए औरते
तन्मय होकर
रोपती हैं धान के पौधे
घुटने तक पानी में डूबे हुए
कीचड़ में धंसे हुए
धूप में जलते हुए
फिर भी
गाती हैं
उत्सव के गीत
धान रोपती हुई औरतें
गीतों में कामना करती हैं
कि सूखा या अकाल
इन हरे पौधों को
न सुखाये
पानी बरसता रहे सदा
गाती रहें औरतें
उत्सव के गीत
कि उनके घर का चूल्हा
जलता रहे
बच्चे स्कूल जाते रहें
पिता, मायें और
पतियों को
मिले पेट भर खाना।

इसलिए
धान रोपती हैं औरतें
और गाती हैं
उत्सव के गीत।

•

समय

समय ठहरा नहीं
किसी के लिए
न तुम्हारे
न मेरे
उनके लिए भी नहीं
जो बहुत ताकतवर हैं
समय
सबके लिए चलता है
घड़ी की सुई की तरह
जिसमें बैटरी नहीं होती
इसलिए
रुकता नहीं है समय
मेरे लिए
तुम्हारे लिए
और न किसी के लिए
प्रतीक्षा नहीं करता वह
तुम कितने पीछे छूटे
चलते-चलते गिरे
थक गये
या थकान मिटाने के लिए
पेड़ की छांह में बैठ गये
मुड़कर नहीं देखता वह।
न रुकता है

न रुकेगा
अनवरत चलता है
उसका पहिया।

मैं समय को देखता हूं
अपनी बेटी में
गोद में खेलने के बाद जब वह
स्कूल जाने लगती है
जब मेरी टी-शर्ट
बेटे को फिट होने लगती है
मैं आईने में
देखता हूं अपना चेहरा
कनपटी पर
कुछ सफेद बालों के साथ
समय बैठ गया है।
मैं हर बरस
समय को देखता हूं
जब मेरी सालगिरह पर
बिन बुलाये चला आता है
और एक साल बूढ़ा बनाकर
चला जाता है।

मैं, तुम और सब
समय के पीछे हैं
समय के आगे
न तुम न मैं न वे।

•

बेगन बेलिया

फूलों की क्यारी से
एक लड़की
एक बेगन बेलिया
तोड़ लेती है
बेगन बेलिया की कोख से
अभी पहला ही फूल पैदा हुआ है
बेगन बेलिया को
लड़की पर गुस्सा नहीं आता है
बल्कि
ऊपर आसमान की तरफ देखकर
भगवान से प्रार्थना करती है बेगन बेलिया
मुझे ऊर्जा दो
पानी दो, रोशनी दो
मैं ओर खिलाऊं फूल
तोड़ें जिसे एक नहीं हजार लड़कियां
कि महक जायें उनके जूड़े
महक जाये हवा का आंचल
धरती की मिट्टी
गुलदस्ते रखे कमरे ...और
दुर्गंध भरी सांसें
मैं और खिलूं
सबके लिए।

•

कोरवा *

कोरवा के भाग्य में
बस एक जंगल है
फूस की झोपड़ी
आखेट के लिए
एक धारदार हथियार
शहर, जंगल और
पहाड़ के बीच
पहाड़ी कोरवा
बहुत पुरानी
सभ्यता के अवशेष हैं।
सरकारी अमले को
इन्हें इसी हाल में
जीवित रखना
बहुत जरूरी है
और दिखाना है
जनता को हर साल
विकास प्रदर्शनी में
कोरवा बस्ती की एक झांकी
कि देखें लोग
सरकार की सारी
योजना का लाभ
इन्हे दे दिया गया है
कोरवा की झोपडी में

अनाज है
झोंपड़ी के सामने
हैण्डपम्प है
मुर्गी और सुअर
पालता है वह
रेशम का उत्पादक
बन गया है
कपड़े हैं उसके पास
तन ढकने के लिए
सारी सुविधा
सरकार ने
मुहैया करा दी है।

देखें नगर के लोग
सरकार कितनी संवदेनशील है
कितना रखती है ख्याल
पहाड़ी कोरवा का।
और जब
प्रशासन की विकास प्रदर्शनी समाप्त होती है
कोरवा फेंक दिया जाता है
उसी बीहड़ में
जहां नहीं पहुंचते
गरीबी रेखा से नीचे के साधन
नहीं पहुंचता
अंत्योदय अन्न योजना का
दो और तीन रुपये किलो का अनाज
कोरवा
अपने हथियार की धार
तेज करने को विवश हो जाता है
तोड़कर सरकारी प्रतिबन्ध
करेगा शिकार वन्यप्राणियों का
खोदेगा कंदमूल
तेन्दू/महुआ/चार।



रमेश सिन्हा

- जन्मतिथि : 9 जून, 1963
- शिक्षा : एम.ए. समाजशास्त्र, विधि स्नातक
- संप्रति : कार्यपालिक सेवा में (छत्तीसगढ़ शासन)
- देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित। बाल साहित्य पर भी विशेष लेखन एवं प्रकाशन, पुरस्कृत एवं सम्मानित।

  कविताओं के साथ-साथ कहानियों का भी लेखन।
- रोजमर्रा की ज़िन्दगी में बहुत कुछ अनायास ध्यान खींचता है और केवल प्रेरणा नहीं देता- लिखने के लिए बाध्य करता है। यही बाध्यता या प्रतिबद्धता ही रचनाओं के सृजन का हेतु बनती है।
- पुस्तकाकार में यह प्रथम कृति सुधी पाठकों को सौंपते हुए अपार संतोष की अनुभूति।

- **संपर्क**

  श्रम न्यायालय के सामने, जोड़ा पीपल
  अम्बिकापुर - 497 001 जिला : सरगुजा
  (छत्तीसगढ़) दूरभाष : 07774-25719